सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान (1904—1948) का जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में हुआ था। बाल्यकाल से ही उन्हें कविताएँ रचने का शौक था। वे चार बहनें और दो भाई थे। 1919 में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ उनका विवाह हुआ। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। उनके दो कविता संग्रह 'मुकुल', 'त्रिधारा' तथा तीन कथा संग्रह 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी', 'सीधे-साधे चित्र' प्रकाशित हुए, पर उनकी प्रसिद्धि 'झाँसी की रानी' इस कविता के कारण है। वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं, किन्तु इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल की यातनाएँ सहने के पश्चात अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। इनके चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है। 15 फरवरी, 1948 को एक कार दुर्घटना में इनका आकस्मिक निधन हुआ था। सुभद्रा कुमारी चौहान की याद में उनकी जीवनी पुत्री, सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है।

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नव नियुक्त तटरक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया है।

कविता सार

प्रस्तुत कविता 'वीरों का कैसा हो वसन्त' सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की आजादी के लिए लड़ रहे बलिदानी वीरों के सम्मान में लिखी है। इसमें कवयित्री के मन की देश की, आजादी के लिए गहरी तड़फ की अभिव्यक्ति हुई है। जब हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था तब कवयित्री गुलाम देश के वीरों को प्रश्न करती है कि गुलाम देश के वीर लोग वसन्त का उत्सव कैसे मनाएँ? पराधीन देश को वीरता की आवश्यकता होती है और वीरता बलिदान चाहती है, शृंगार और सौंदर्य नहीं। देश

के वीरों का प्रथम कर्तव्य देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करना होता है। आजादी के बाद ही वसन्त की बहार, मौज-मस्ती और शृंगार-सौन्दर्य का आनन्द लिया जा सकता है। स्वतंत्रता ही हमारा सच्चा वसन्त और उत्सव है। वीरों को अपने देश के गौरवमयी इतिहास को याद करना पड़ेगा। संघर्ष और बलिदान के बिना आजादी सम्भव नहीं है। लंका, कुरुक्षेत्र, हल्दीघाटी और सिंहगढ़ आदि संघर्षों में आजादी पाने और अन्याय-अत्याचार का विरोध करने के लिए महाराणा प्रताप और तानाजी मालुसरे जैसे वीरों ने अपनी जान की बाजी लगाई थी। आज भी उसी गौरवमयी इतिहास को दोहराने की आवश्यकता है।

अन्त में कवयित्री दु:ख प्रकट करती है कि, आज भूषण और चन्दबरदाई जैसे कवि नहीं हैं और ना ही ओजपूर्ण छंदों में काव्य लिखा जा रहा है। अंग्रेजी शासन ने देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना के साहित्यकारों पर पाबन्दी लगा रखी है, तो कौन खुलकर बता सकता है कि वीरों का वसन्त कैसा हो?

वीरों का कैसा हो वसन्त

आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसन्त

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग;
है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसन्त

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए हैं आदि अन्त
वीरों का कैसा हो वसन्त

गलबाहें हो या हो कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसन्त

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग

ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग-जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसन्त

हल्दीघाटी के शिला खंड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसन्त

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बँधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसन्त